जनवरी-जून, 2020 अंक - प्रथम

गवाक्ष

चित्र
राजा कुमार मल्लिक

ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi VishwaVidyalaya,Wardha

गवाक्ष

प्रथम अंक

अंक

जनवरी–जून

संरक्षक

प्रो. मनोज कुमार

प्रो. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी

संपादक मंडल

डॉ. ऋषभ कुमार मिश्र

डॉ सूर्य प्रकाश पांडेय

डॉ जगदीश नारायण तिवारी

डॉ सत्यवीर

डॉ अभिलाष गोंड

सुश्री ऋचा

वैभव उपाध्याय

प्रकाशक

कुलसचिव

म.गा.अं.हि.वि. वर्धा

ई–मेल

gvakshmgahv@gmail.com

संघर्षों का साथी अमलतास
अभिषेक उपाध्याय

स्त्री
मोनिका वर्मा

अकेला दीप
सूरज पांडेय

आखिर क्यों
स्मृति दुबे

शिशुस्मृति : कठपुतली का खेल
जयदेव दास

अरमान हम भी रखते हैं
मनीष तिवारी

समय
सुमन कुमारी

हमारी चुप्पी में शहर
नवनीत कुमार सिंह

शैय्या पर लेटा मनुष्य
नवनीत नागर

वतन हमारा गुरूर
ईश शक्ति सिंह

शब्दों से तस्वीर बना रहा हूँ मैं
तेज प्रताप टंडन

माँ
प्रतीक त्रिपाठी

देव भूमि उत्तराखंड से पहली मुलाकात
किरण पाण्डेय

शैक्षणिक भ्रमण के दौरान मेरी पहली नेपाल यात्रा
गौरव कुमार

पर्यावरण और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया
बी. एस. मिरगे

भूल...
सौरभ कुमार

पीपल और प्रेम
विवेक कुमार साव

सबकी माई सिंधु ताई
सुधीर कुमार

कोरोना
डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी

दिहाड़ी मजदूर
श्यामदास गोंड

इस अंक की सामग्री से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।

शुभकामना संदेश

गवाक्ष के प्रवेशांक के लिए इस अंक में योगदान करने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल सदस्यों को बहुत–बहुत शुभकामनाएं। गवाक्ष की पूरी योजना राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन के कालखंड में चहुंओर बंद हो रही दुनिया में विद्यार्थियों और अनुसंधित्सु के सृजनधर्मिता के लिए एक खिड़की खोलने जैसा है। यह खिड़की सृजनात्मक चेतना के प्रकाश से सबको प्रकाशित करेगी, इसका मुझे विश्वास है। प्रवेशांक में रचनाओं का वैविध्य और सृजनधर्मी चेतना का व्यापक फलक इस पत्रिका के प्रभावी होने का विश्वास दे रहा है। यह पत्रिका साहित्यिक या असाहित्यिक विमर्श नहीं है अपितु असाहित्यिक सृजनात्मक चेतना का दिग्दर्शन है। पाठक को इसमें खट्ठा–मीठा अनुभव होगा। बालक की तोतली ज़बान से निकलने वाली रचना का सा आनंद आएगा पर नवीनता या नवोन्मेष जो साहित्य की प्रथम शर्त है, सृजन का प्राण तत्त्व है, वह सर्वत्र व्याप्त है। यह गवाक्ष पर खड़े होकर पूरब से सूरज को उगते देखने जैसा है। ताजगी, ऊष्मा और रंगो से भरपूर दृश्य को देखने का आनंद हर पाठक को आएगा, इस विश्वास के साथ पूरी टीम को अशेष शुभकामनाएं।

प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल
कुलपति
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

संपादक की कलम से

वर्त्तमान में पूरी दुनिया कोरोना महामारी से जूझ रही है। इस स्थिति में हमारी दिनचर्या और सामाजिक संबंधों में बदलाव हुए हैं। बदलाव की दशा में सकारात्मक संलग्नता आवश्यक होती है। इससे हम न केवल अपने मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को ठीक रखते हैं बल्कि अपने परिवेश में भी निराशा के प्रसार को रोकते हैं। सकारात्मक संलग्नता जनित सृजन बोध बुद्धि और भाव दोनों को जाग्रत रखता है और कुछ नया करने की अभिप्रेरणा देता है। नए की अभिव्यक्ति खुद को व्यक्त करने के साथ–साथ आसपास के बदलावों के प्रति अनुभव और मनन को भी प्रकट करती है। इसमें जीवन के स्वर और रंग होते हैं जिनका वैविध्य आनंद सृजित करता है। यह आनंद हमारे परिसर का हिस्सा बने रहें। विश्वविद्यालय का परिसर विद्यार्थियों की सक्रियता से ऊर्जस्वित रहे। इस आपदाकाल में आत्मानुशासित और संतुलित जीवनचर्या के साथ सृजन के अवसर उपलब्ध हों। इस लक्ष्य को निर्दिष्ट करते हुए विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति द्वारा हमें गवाक्ष के संपादन का दायित्व सौंपा गया। कोरोना काल में जीवन की गति के साथ सृजन–स्वर को बनाए रखने के लिए हम लोगों ने सहर्ष इस दायित्व को स्वीकार किया। हम लोगों ने अपने विद्यार्थियों, शोधार्थियों, संकाय सदस्यों और कर्मचारियों के साथ मिलकर 'गवाक्ष' पत्रिका के माध्यम से परिसर के जीवन को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। इसके लिए हमें पर्याप्त संख्या में रचनाएं प्राप्त हुईं। इसके लिए हम सभी रचनाकारों के प्रति आभारी हैं। यद्यपि हमने अधिकांश रचनाओं को इस पत्रिका में स्थान देने का प्रयास किया है। फिर भी, जिन रचनाओं को हम शामिल नहीं कर पाए हैं, अगले अंक में हम उन पर पुनः विचार करेंगे। इस प्रयास के मूल में हमारे माननीय कुलपति की अभिप्रेरणा है जो सदा कुछ नया करने का उत्साह देती है। हमारे संरक्षकद्वय प्रो. मनोज कुमार और प्रो. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी के मार्गदर्शन ने पत्रिका के वर्तमान स्वरूप तक पहुंचाया है। यह पत्रिका पाठकों के सुझाव और सहयोग से भविष्य में और भी संवर्धित होगी इस कामना के साथ!

संघर्षों का साथी अमलतास

अभिषेक उपाध्याय

वैशाख खत्म होने को है। दुपहरी तेज होने लगी है जेठ आने तक तपन और बढ़ेगी। लॉकडाउन के खुलने का भी कोई भरोसा नहीं है। जो जहाँ है कैद है। चारों तरफ पहरा है। भविष्य की चिंताओं से ज्यादा वर्तमान में खुद को बचा ले जाने की लड़ाई चल रही है। जीवन के प्रश्न गहराने लगे हैं। जीने का तरीका और नजरिया दोनों बदलने लगा है। ऐसे में प्रकृति की भूमिका अहम होने लगी है। देश–दुनिया में एक त्रासदी जरूर है लेकिन प्रकृति खुश है। वह पहले से ज्यादा जीवंत हो रही है। मानव का स्पर्श खत्म होते ही वह भय से मुक्त हो गयी है। घरों के आसपास मैना, महोख, कोयल, कौआ, कबूतर, तोता और गौरैया सबकी संख्या बढ़ने लगी है। टिटिहरी की आवाज अब रातों में कई बार जगाती है। झींगुर एक साथ शाम से ही तान छेड़ने लग जाते हैं। खिड़की खुला छोड़कर देखिए तितलियाँ अंदर तक आने लगी हैं। रात के आकाश में तारों का टिमटिमाना कम हो गया है। उनकी रोशनी अब सीधे धरती तक पहुँच रही है। सड़क के किनारे पेड़ों की पत्तियाँ चमकने लगी हैं। उनके फूल गाढ़े होकर और अधिक खिलने लगे हैं। अब नीचे गिरे फूल महफूज हैं, उन्हें पैरों और गाड़ियों के पहियों से कुचलने का डर नहीं है। अब उन्हें बारिश के साथ कुछ दूर बह जाने का इंतजार है। इस गर्मी में बात फूलों की हो और

अमलतास–गुलमोहर छूट जायें, कैसे हो सकता है? यही तो उनके पहचान का समय है जब सभी उन पर फिदा हुए रहते हैं। इससे पहले उन्हें कौन पूछता? ये अपने संघर्ष के दिनों में पहचान के लिए तरसते हैं, जैसे मनुष्य। अमलतास को देखिए न। एक ठिगना सा पेड़ बहुत मोटापा नहीं कि कुर्सी–पलंग लायक लकड़ी दे, छाया भी ऐसी नहीं कि तरावट दे, फल भी ऐसा नहीं की स्वाद दे। फल तो पककर खुद बारिश में सड़कर गिरने के इंतजार में लटका रहता है। पकने के बाद तोड़कर आप झुनझुना बजाने के काम में लाइए वह अलग बात है। तब भी वह जड़ मजबूत किए संघर्ष करता है, पत्तियाँ तक साथ छोड़ जाती हैं। बेचारा अकेले जूझता है। सही वक्त आने की प्रतीक्षा करता है। जिसमें पक कर वह सोना बन सके। ठीक वैसे जैसे मनुष्य करता है। वह भी संघर्ष के दिनों में अकेला पड़ जाता है। लेकिन जब दोनों संघर्ष के बाद खिलते हैं, तो उनकी पूछ बढ़ जाती है। हर कोई मोहित होने लगता है। बखान करने लगता है। वाह–वाह करते नहीं थकता। आग में तपने से जो चमक सोने में पैदा होती है, वही अमलतास के फूलों में सूर्य की ताप से। वही चमक मनुष्य में कठिन परिस्थितियों के संघर्ष से आता है लेकिन पहचान उस क्षण के बाद ही मिलती है। बहरहाल प्रकृति अपनी खूबसूरती लिए आपकी चौखट तक आ रही है। सृष्टि के सृजन में बहुत कुछ नया हो रहा है। अकेले नहीं पड़ना है। इन्हें थोड़ा समय देकर तो देखिए आप भी जीवंत हो उठेंगे।

शोधार्थी, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य

स्त्री

मोनिका वर्मा

किसी की माँ,
किसी की बहन,
किसी की पत्नी हूं मैं
हजारों रूप हैं मेरे,
कैसे कहूँ अपनी कहानी मैं
हां एक स्त्री हूं मैं.....
सीता हो या द्रौपदी,
युगों–युगों से हैं जानी–मानी,
एक तरफ था आत्मसम्मान
तो एक तरफ बदले की ज्वाला
करके निश्छल मन को शांत
भटक रही थी वन–वन में नारी।

उसका प्रतिरूप स्वरूप हूँ मैं
हां एक स्त्री हूं मैं.....
ऐसी पावन धरती को
तूने किया निष्पाप
फिर भी ऐसी घृणा दृष्टि से
क्यों देख रहा मुझको संसार
है यक्ष प्रश्न जो सदा खड़ा
जो देखे है केवल करता श्रृंगार
कोई और रूप नहीं स्वीकार उसे
क्योंकि एक स्त्री हूं मैं.....?
चलते, गिरते, उठते
सहती हूँ आँखों की तपिश तेज,
हो जाता तामस का अंधकार तब
जब उठते मददगार हाथ,

अहसान भरी वो कुटिल छुवन
निज छलनी होती देख देह
निर्लज्ज भाव से सब सह जाऊँ मैं,
क्योंकि एक स्त्री हूँ मैं....?
एक बार पुनः सुन लो
गिरने वालों डरी नहीं हूँ मैं
आँचल के फटने से रुक जाऊं मैं
वह सृजन काल की बस कड़ी नहीं हूँ मैं
श्रृंगार है, अभिमान है, हाथों में धार है
करूंगी एक नया निर्माण मैं
क्योंकि एक स्त्री हूँ मैं .....

शोधार्थी, प्रवासन एवं डायस्पोरा अध्ययन

सूरज पांडेय

अकेला दीप

यह कहानी है एक दीये (दीपक) की! जो आकार और प्रकार दोनों में बहुत नन्हा सा–प्यारा सा था। जिसे उसके सृजनकर्ता ने प्यार से बनाया और जतन से सजाया था। इस प्यार और दुलार के कारण उसे अपनी सुंदरता और किस्मत पर बड़ा नाज होता था। उसे लगता था वह अपने जैसा केवल अकेला है। पहले वह अपने ही परिवार के बीच रहता और उसे लगता वह सबसे अलग है। लेकिन एक दिन उसे बाजार में पहुंचा दिया गया और उसे अब अपने रूप पर नाज नहीं हो रहा था। अब उसे अपने इसी आकार पर शर्मिंदगी होने लगी थी। बड़े–बड़े बर्तनों को देखता तो उसे लगता उसकी किस्मत ही खराब है जो उसने ये रूप पाया। बड़े–बड़े सुंदर बर्तनों के लिए रोज ग्राहक आते और तारीफ करते हुए खरीद कर चले जाते। वह एक कोने में अपने संगी–साथियों के बीच बैठा, अपनी किस्मत के बारे में सोचता रहता। सब कुछ विपरीत होते हुए भी उसमें धैर्य और उत्साह था। रोज ग्राहक आते और वह उछल–कूद करता हुआ खुद को खरीदे जाने के लिए कोशिश में लगा रहता, लेकिन असफल हो जाता। यही उसके प्रतिदिन की क्रिया–सी बन गयी थी। बीतते समय के साथ उसकी हिम्मत टूटती गयी पर वह निराश नहीं होता। उसे पता था सुंदर और बड़े–बड़े बर्तनों के बीच अपनी जगह बनाना इतना आसान नहीं होता। उसके प्रयासों का परिणाम यह रहा कि वह दिन आया, जिसका इंतजार हर दीये को रहता। आज उसकी किस्मत का फैसला होना था। यह दिन दीपों की दुनिया में ''दीपावली'' के नाम से जाना जाता है। जैसे इंसानी दुनिया में यों कहें तो नौकरी लगने का दिन, जिसके लिए वे अपनी पूरी जिंदगी तैयारी करते हैं। संयोग कहें! या उसका दुर्भाग्य! सृजनकर्ता द्वारा आज भी टोकरी में जब एक–एक दीयों को जांच–परख के रखा जा रहा था तो उसे बहुत ध्यान से देखने के बाद अलग निकाल कर रख दिया गया। वह बेचौन था, इधर–उधर अपने भाई–बंधुओं को आश्चर्य भरी निगाहों से देख रहा था। दीयों की टोकरी में रखे जाने के बाद भी सृजनकर्ता द्वारा अलग रखने के कारण को समझ नहीं पा रहा था। सब कुछ देखने के बाद भी उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह अपने सृजनकर्ता द्वारा ही ठुकरा दिया गया है। एक ही पल में उसके दिमाग में सैकड़ों प्रश्न घूम रहे थे? जिसका उत्तर देने के लिए उसके आस–पास उसका परिवार भी न था। वह सोच रहा था शायद वह अपने भाई–बंधुओं से भी आकार और प्रकार में भी थोड़ा भिन्न है इसीलिए उसे उसके निर्माणकर्ता द्वारा भी नहीं चुना गया। यह सब क्या हो रहा था? उसकी समझ से परे था। रात को दीयों की खाली टोकरी देखकर उसे अपनी किस्मत पर फिर से रोना आ गया। सारे दीयों को अपनी–अपनी मंजिल मिल गयी थी। वह अभी भी एक कोने में पड़ा किस्मत को कोसता अकेला रह गया था। लेकिन शायद उसे इस बात का आभास भी नहीं था, उसके साथ क्या होने वाला था? थके कदमों से, लेकिन चेहरे पर मुस्कान लिए उसका मालिक, उसका सृजनकर्ता आता है और उसे बड़े प्यार से उठाता है, नहलाता है, धुलाता है, और यह क्या? उसके आश्चर्य का ठिकाना ही नहीं रहा, आज उसके सृजनकर्ता ने फिर उसे वैसे ही चूमा जैसे उसके जन्म पर प्यार से चूमा था। आज उसको अभिवावक मिल गया था। असंख्य दीयों के निर्माणकर्ता ने उसे स्वयं के लिए जो चुना था, वह भी अपना द्वार रौशन करने के लिए।

शोधार्थी, शिक्षा विभाग

आखिर क्यों

स्मृति दुबे

आखिर क्यों,
मेरी नानी की नानी के
पहले से
चली आ रही
बेबस लड़की की तरह
क्यों सपने में देखूँ
खुद को
हर पल,
तुम्हारी बाहों में
बिखरते हुए
क्यों देखूँ,
सपने में खुद को
तुम्हारा सहारा पाते
हुए?
तुम क्यों नहीं,
सपना देखते हो ऐसा
कि
तुम मेरी तरह खुशी –
खुशी
मेरी बाहों में बिखर के
सुकून पाओ
क्यों नहीं, तुम सपना
देखते
कि
तुम्हारे जीने के लिए
'मैं' वजूद बनूँ
तुम्हारा सहारा 'मैं'
बनूँ?
जाओ
तोड़ दी वर्जनायें मैंने,
नहीं देखती ऐसे सपने
जिनमें,
मेरा समर्पण,
मेरी ममता,
मेरा प्रेम,
मेरे कमजोर होने का
पर्याय माना जाये।
अब
ऐसे सपने 'तुम' देखना
शुरू करो
क्योंकि 'तुम'
सच में
मुझसे ज्यादा कमजोर
हो,
भावनात्मक भी
सामाजिक भी
मानसिक भी,
इतना ज्यादा कमजोर
कि
तुम्हारा सारा वजूद ही
निर्भर है
'मुझ' पर।

शोधार्थी, हिंदी एवं
तुलनात्मक साहित्य

सुझाव 1

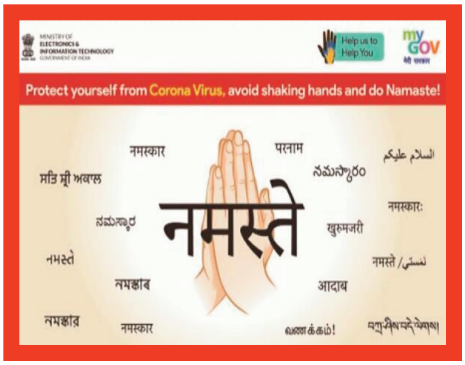

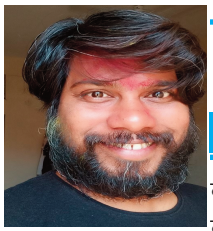

शिशुस्मृति : कठपुतली का खेल

जयदेव दास

बचपन की स्मृतियों में कुछ ठहरा हो न हो एक स्मृति बहुत गहरे ही रची बसी है। स्कूल में कठपुतली के खेल से पहला परिचय हुआ था। एक छोटे से मंच पर ये पुतलियां न जाने कैसे नाचती गाती थी। शिशुमन व नैन उन अदृश्य धागों को ढूंढता कम, इतराता ज्यादा था। पर आज जब उस ओर लौटता हूं तो उन कलाकारी पंजो को शून्य पाता हूँ, जिन के इशारों पर वे कठपुतलियां डोलती थी। पंजों से पूछने पर बताती हैं कि अब बच्चों को इनसे मोह नहीं। क्या ये सच है कि शिशुमन इतना स्मार्ट हो गया कि कल्पलोक से विरत होना चाहता होगा! नहीं, हमने ही उनके हाथों में प्लास्टिक के खिलौने दिए और अब तो मोबाइल से उनका जी बहला रहें हैं। इनमें उन नवांकुरों का क्या कुसूर? कठपुतली का खेल बच्चों के लिए एक खेल तो है पर इन्हें चलाना या संचालित करना कोई बच्चों का खेल नहीं। इसे एक निपुण शिल्पी या कलाकार ही चला सकता है। इसलिए आज ये एक कला रूप है। कठपुतली कला एक अत्यंत प्राचीन कला है। जिसे नाट्यकला से भी जोड़कर देखा जाता है। आज हमारे बीच कुछ कलाकार ही इस विधा को संग लेकर आगे बढ़ रहे हैं। उनमें से ही एक वाराणसी के मिथिलेश दुबे हैं। **मिथिलेश जी कठपुतली कला का इतिहास कितना पुराना है?** मिथिलेश : इसका उल्लेख ई पूर्व चौथी शताब्दी से मिलता है। महर्षि पाणिनी प्रणीत 'अष्टाध्यायी' ग्रंथ के नाट्यसूत्रों से भी इसका पता चलता है कि पुतली नाटकों का प्रचलन उसके पहले से था। **जयदेव : इन नाटकों की कथावस्तु काल्पनिक होती है या कुछ और?** मिथिलेश : भारत में पारंपरिक कठपुतली नाटकों की कथावस्तु में पौराणिक साहित्य, लोककथाएं और किवदंतियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। पहले अमर सिंह राठौड़, पृथ्वीराज चौहान, हीर–रांझा, लैला–मजनू आदि की कथाएँ ही कठपुतली के खेल का हिस्सा थे। लेकिन अब सामाजिक विषयों, महिला शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, परिवार नियोजन, ज्ञानवर्धक और मनोरंजक विषयों को दिखाया जाता है। **जयदेव : महापुरुषों की जीवनी भी दिखाई जाती है। आप भी तो गांधी के जीवन पर आधारित कठपुतली के इस खेल यानि नाटक को लेकर सम्पूर्ण भारत में भ्रमण कर रहें हैं?** मिथिलेश : जी आपने सही फरमाया। मुझे हर स्कूल में बच्चों के बीच इसे खेलना बहुत भाता है। एक सुकून सा मिलता है। जब उन बालकों के चेहरे पर मुस्कान और आंखों में आश्चर्य देखता हूँ, इस खेल को देखते हुए जो उनके चेहरे पर खुशी दिखती है। अपना बचपन लौट आता है। **जयदेव : भारत में कठपुतली कला की क्या स्थिति–परिस्थिति है?** मिथिलेश : भारत में ये विधा वर्तमान में संकट के दौर से गुजर रही है। जीविकोपार्जन के लिए कठपुतली कलाकारों को गांव, कस्बों से पलायन करना पड़ रहा है। रोजगार की तलाश ने ही कठपुतली कलाकारों की नई पीढ़ी को इससे विमुख होने के लिए मजबूर किया है। जन उपेक्षा व उचित संरक्षण के अभाव में नई पीढ़ी इस पुरातन काल से उतनी नहीं जुड़ पा रही है, जितनी जरूरत है। प्राचीन भारतीय संस्कृति व कला को बचाने और प्रोत्साहन देने के लिए तमाम दावों के बावजूद कठपुतली कला को बचाने के लिए सरकारी स्तर पर कोई प्रयास नहीं किया जा रहा है। **जयदेव : विश्व कठपुतली दिवस के बारे में बताइये?** मिथिलेश : विश्व कठपुतली दिवस की शुरुआत 21 मार्च 2003 को फ्रांस में हुई थी, इसके बाद यह दिवस सभी देशों में मनाया जाने लगा। भारत में भी इस दिवस का आयोजन दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई, बनारस सहित देश के अनेक नगरों में मनाया जाता है।

वाराणसी के कठपुतली कलाकार मिथिलेश दुबे से रंगकर्मी जयदेव दास द्वारा लिए गए साक्षात्कार के मुख्य अंश

एम.ए. प्रदर्शनकारी कला विभाग

मनीष तिवारी

अरमान हम भी रखते हैं

अंदाजे बयाँ ना हो सही
पर दिल में अरमान
हम भी रखा करते हैं
आओ कुछ नया करते हैं
दिल के अरमानों को बयां करते हैं
गिरने के डर से ना करने वाली कोशिशों को
बयाँ करते हैं
गिर कर संभलने की दुआ करते हैं
आओ कुछ नया करते हैं
अतीत को भुला कर
वर्तमान में कुछ कर गुजरते हैं
आने वाले अतीत को इतिहासों में दर्ज कर
गुजरते हैं
आओ कुछ नया करते हैं
रैना के सपनों को रवि के तले सच कर
गुजरते हैं
शिखा के बीच रोड़ों को पार कर हौसले
बुलन्द करते हैं
आसमां को छू लेने वाली उड़ान भरते हैं
आओ कुछ नया करते हैं ।।

एम.ए. प्रदर्शनकारी कला विभाग

समय

सुमन कुमारी

ठहर जा ऐ जिंदगी,
तू कब तक भागेगी
अपनों से आगे तो निकल गयी
क्या आगे अपनों से मिल पायेगी?
ठहर जा ऐ जिंदगी
तू कब तक भागेगी।।
कौन है यहां जो तेरे दुख को बाँटेगा?
तुम्हें सांत्वना का व्यापार देगा,
तुम्हें सच्चे हृदय का प्यार देगा,
पर अपनों जैसा कोई प्यार दे पाएगा?
ठहर जा ऐ जिंदगी
तू कब तक भागेगी ।।
बार–बार तेरे अन्तर्मन से
एक आवाज आयेगी,
लौटने के लिए कहेगी।
क्या तू लौट पायेगी?
ठहर जा ऐ जिंदगी
तू कब तक भागेगी।।
जब तू उम्र के अन्त में होगी,
तेरे अपने हृदय–प्रेमी स्मरण होगें
तब तू शून्य पड़ जायेगी
और अपने को ही विस्मरण कर
जायेगी।
ठहर जा ऐ जिंदगी,
तू कब तक भागेगी।।

एम.एड. शिक्षा विभाग

सुझाव 2

हमारी चुप्पी में शहर

नवनीत कुमार सिंह

हमारी चुप्पी में शहर
हमारी खामोशी में शहर,
नहीं होता उतना चुप
वहां की पीढ़ियाँ
जगाये रखती है उसे,
सुनसान नहीं होने देती
अंधेरी रातों को....
हिलकोरती रहती है शांत जल को
जैसे मछलियां!
जब खामोशी में होते हैं हम
तब चुप नहीं होता है शहर,
पक्षी उसे चुप होने नहीं देते
वे उन चुप्पियों को देते हैं एक धुन,
हमारी अनुपस्थिति में
कुत्ते शामिल होते हैं
वहां की चहल–पहल में
उनका शोर हमेशा नहीं होता अपशकुन!
हवाएं थमने देती नहीं
वहां की रंगत,
ऐसे समय शाम
थोड़ी और सुहानी हो जाती है।

शोधार्थी
हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग

शैय्या पर लेटा मनुष्य

नवनीत नागर

कमरों में गूँजती आवाजें,
अब थक चुकी है शायद।
होने और न होने के बीच का फर्क,
अब टूट चुका है।
ना भूत ना भविष्य,
किसी को देखने की चाह नहीं है।
शैय्या पर लेटा मनुष्य,
अब इस क्षण का हो चुका है।
शब्दों का व्यापार
अब खत्म हो चुका है,
उस आखिरी गुजरी हुई साँस के साथ,
हर बंधन टूट चुका है।
अब वापस जागने की कोई चाह नहीं
पास होते रुदन की कोई परवाह नहीं
शैय्या पर लेटा मनुष्य,
अब शैय्या का हो चुका है।
मेरा भय निर्भीक हो गया है ।
इन लकड़ियों से ले ली है प्रेरणा शायद
कागा आज अगर नैना भी चुग ले,
तो कोई शिकायत ना होगी।
जिसे देखने की चाह थी,
वह इस नींद के उस ओर खड़ा है।
शैय्या पर लेटा मनुष्य,
अब खुद का हो चुका है।
आज इस पल इस क्षण केवल मैं हूँ।
हर पल का हश्र काफूर हो गया है।
संसार की कल्पनाएँ अब,
ठहाकों में तब्दील हो चुकी है।
ना कोई जहान, ना कोई निशान,
ना भगवान, ना इंसान
शैय्या पर लेटा मनुष्य,
अब खुद का हो चुका है।

बी.एड. शिक्षा विभाग

वतन हमारा गुरूर

ईश शक्ति सिंह

पा लिया जो हमने आज, वह सर का
ताज हमारा था,
होकर अपना जो ना हमारा था,
वो अभिमान हमारा था,
इस धरती का वह स्वर्ग हमारा,
हमें जान से प्यारा था,
जिसे रक्त से सींचा हमने,
वह अभिमान हमारा था,
पा लिया जो हमनें आज,
वह सर का ताज हमारा था,

फतह किया है हमनें आज,
मिटा कर धारा 370 को,
आगे बढ़ा है और बढ़ता ही रहेगा,
जिस देश ने हमको पाला है,
सुन लो पाक की आवाम सारी,
तुम्हारें सरपरस्तों की अब खैर नहीं,
खैर नहीं अब पाक तुम्हारी,
अब तिरंगा बलूचिस्तान पर फहरेगा,
पा लिया जो हमनें आज,
वह सर का ताज हमारा था।

शोधार्थी
प्रवासन एवं डायस्पोरा अध्ययन विभाग

शब्दों से तस्वीर बना रहा हूँ मैं

तेज प्रताप टंडन

अपनी मूर्ति को खुद ही माला पहना रहा हूँ मैं।
यानी पागल हूँ और आपको भी पागल बना रहा हूँ मैं।
एक जिंदगी जो मुझसे नाराज है काफी दिनों से,
आप सही समझ रहे हैं उसको ही मना रहा हूँ मैं।
लोग कहते हैं जो भी गलत सही है इस दुनिया में,
उन सबको बड़ी मोहब्बत से अपना रहा हूँ मैं।
कुछ देर रूको तो कागज से वही खुशबू
आएगी,
जो खुशबू थी उसकी तस्वीर बना रहा हूँ मैं।
मुझ पर हँसने रोने वाले ये भूल जाते हैं कि कभी,
अपने जिंदगी की सबसे बड़ी दुर्घटना रहा हूँ मैं।
जिस जिस्म को देवता समझते थे, पूजते थे लोग,
उसी के खाक होने का 'तेज' मातम मना रहा हूँ मैं।

शोधार्थी
भाषा विज्ञान एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग

मां

प्रतीक त्रिपाठी

कवि वर्षों करता रहा
उथल पुथल
करता रहा यात्राएँ
खंगालता रहा
देश–विदेश के ग्रंथालयों में
शब्दकोश
कवि को लिखनी थी
मां पर कविता ।
लिए तराजू तौलता रहा
वैदिक से लेकर
समकालीन तक के
उपमान।
पर अफसोस
उपमानों का पलड़ा झूलता रहा
हवा में
मां का पलड़ा जमीन से हिला तक
नहीं ।
कवि रात भर आकाश में
चित्र गढ़ता और फिर
उसे मिटाता रहा
कवि रात भर
ताकता रहा शून्य में
धीरे–धीरे
आकाश में मिटने लगी
तारों की दुनियां
नदी पर फैलने लगी थी
सूर्य की लालिमा
कवि रेत पर
लिखता है 'मां'
और आश्वस्त होकर उठ जाता है
कि आज उसने कविता लिखी है।

बी.एड. शिक्षा विभाग

देव भूमि उत्तराखंड से पहली मुलाकात

किरण पाण्डेय

मैं और मेरी दो सहेलियां रूचि और प्रतिभा उत्तराखंड घूमने गए। हमारे हिन्दू ग्रंथों, वेदों और साहित्यों में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। उत्तराखंड में गढ़वाली और कुमाऊँनी बोली जाती है। उत्तराखंड में हरिद्वार यानी कि हरि का द्वार भी है, जहाँ जाने बस से मन शांत हो जाता है। यहाँ बौद्ध मंदिर भी है, जो बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार हेतु अपने अनुयायी को सदैव शिक्षा प्रदान करते रहते हैं। उत्तराखंड में आते ही आप पहाड़ी वादियों में खो जाते हैं। हमने अपनी यात्रा सेवाग्राम रेलवे स्टेशन से प्रारम्भ की और दिल्ली तक जा पहुँचे। दिल्ली से हमारी अगली ट्रेन हरिद्वार के लिए थी। यह हमारे लिए बेहद खुशनुमा पल रहा। हर कोई चाहता है कि अपने दोस्तों के साथ सफर पर जाये और यदि लड़कियां किसी सफर पर जाने की बात करती हैं, तो हजारो प्रश्न खड़े हो जाते हैं पर हमने परिवार के सामने बात रखी, और यात्रा पर निकल गये। हमारी ट्रेन सेवाग्राम से केरला एक्सप्रेस शाम 7 बजे थी। यह अगले दिन दोपहर में 1 बजे दिल्ली पहुँची। अपने दोस्तों के साथ मेरी पहली यात्रा मेरे लिए बेहद खास रही। ट्रेन के सफर में हमने गाना–बजाना, खेलना और एक दूसरे के साथ मस्ती भी की और इसी हंसी ठिठोली के साथ हम अपने पहले ठहराव पर पहुँच गये। दिल्ली, जहाँ लोगों के पास एक दूसरे के लिए वक्त नहीं और जो देश की राजधानी भी है। जब हम यहाँ पहुंचे तो भागम–भाग वाली जिंदगी हमें स्टेशन पर दिखाई दी। इसके बाद हम लोगों ने आगे की यात्रा के लिए दूसरी ट्रेन ली। दिल्ली से हरिद्वार का सफर इतने उत्सुकता के साथ बीता कि कब हम हरिद्वार पहुंचे पता ही नहीं चला। हरिद्वार की कल्पना मेरे मन में कुछ अजीब थी। मानों कि सब वहां भगवान के भक्त होंगे, ऋषि मुनि जगह–जगह पर मिलेंगे। जब हम रात्रि 9 बजे हरिद्वार स्टेशन पर पहुंचे तो वहां की शांति ने मेरा मन मोह लिया। हरिद्वार की ताजी हवा, गंगा का एहसास और आत्मिक शांति मुझे उसी क्षण महसूस हुई। यहाँ से हम अपने अगले गंतव्य शांति कुंज के लिए निकल पड़े। शांति कुंज हरिद्वार में गंगा के तट पर स्थित वह स्थान है, जहां अखिल भारतीय गायत्री परिवार का मुख्यालय है। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य इसके संस्थापक हैं। शांति कुंज में प्रवेश निःशुल्क है। इसके निःशुल्क होने का कारण है कि देश–विदेश से लोग आकर यज्ञशाला, गायत्री माता का मंदिर, अखंड दीप और देवात्मा हिमालय मंदिर का दर्शन कर

सके। शांति कुंज में हमने प्रवेश किया। हमें शयन कक्ष उपलब्ध कराया गया। महिलाओं और पुरुषों के ठहरने की व्यवस्था अलग अलग थी। शयन कक्ष में प्रवेश नाम पंजीकरण के बाद हमें गद्दे लाकर अपने कक्ष में विश्राम करने की बात कही गयी। दिनभर की यात्रा के बाद हम थक गये थे। हमें जल्दी ही नींद आ गयी। प्रातःकाल हमें जल्दी उठना था क्योंकि सुना था, कि यहाँ गायत्री यज्ञ होता है, जिसका बहुत महत्व है। हम जल्दी तैयार होकर यज्ञ के लिए निकल गये। यज्ञशाला में एक अग्निकुंड चारों तरफ श्रद्धालु, भक्तगण बैठे हुए थे। यज्ञ आधे घंटे चला, फिर इसके बाद सारे भक्तगण बाहर में बनी एक स्तंभ में जिसमें श्रीराम आचार्य के पद चिन्ह अंकित है, उस पर पुष्प अर्पण किए। ऐसी मान्यता है, कि यहाँ पेपर पर लिख के रख देने से मनोकामना पूरी हो जाती है। ऐसा श्रद्धालु करते भी हैं। इसके बाद हम शांति कुंज की पवित्र यात्रा के लिए निकल गए। शांति कुंज के भीतर भक्तों के लिए प्रसाद (भोजन) की व्यवस्था भी थी। प्रसाद के लिए लम्बी–लम्बी कतारें लगी थी। जिसमें हम भी शामिल हुए। बिना लहसुन प्याज का भोजन बेहद ही स्वादिष्ट और सात्विक था। कार्यकर्ता सभी भक्तों से भोजन ना छोड़ने का आग्रह कर रहे थे। भोजन के बाद हम हर की पौड़ी के लिए निकल गये। यहाँ अपने गंतव्य तक पहुँचने के लिए हमने ऑटो का सहारा लिया। हर की पौड़ी हरिद्वार का एक पवित्र और सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक स्थान है। हर की पौड़ी नाम सुनने में थोड़ा अजीब तो लगता है पर इसका अर्थ है,नारायण के चरण। ये वो स्थान है, जहाँ गंगा नदी पहाड़ों से निकलकर मैदानों में प्रवेश करती हैं। यहाँ एक मुख्य घाट है। मुख्य घाट के अलावा नहर के किनारे ही छोटे बड़े कई घाट हैं। हर की पौड़ी में हर शाम सुबह माँ गंगा की आरती की जाती है। जिसमें देश विदेश से भक्तगण आते हैं। रात्रि के समय घाट का नजारा बेहद ही सुंदर नजर आता है। हर तरफ घंटियों की ध्वनियाँ, सुगंधित वातावरण, कल–कल करती गंगा, भरा हुआ माहौल बेहद ही आनंदित करते हैं। चारों तरफ भीड़ होने के बावजूद भीतर शांति का एहसास होता है। भक्त आरती करने के बाद घाट पर बैठ कर उस दृश्य को अपने आँखों और हृदय में बसा लेते हैं। यकीन मानिए वो क्षण भीतर से शांति प्रदान करता है। तब आप प्रकृति के गोद में होते है। हर की पौड़ी घाट के किनारे लम्बी दूरी तक बाजार, दूकान लगी रहती हैं, जहाँ आप अपनी पसंदीदा वस्तुएं खरीद सकते हैं। हर की पौड़ी में हमने आरती की, अपने लिए कुछ खरीददारी भी की, कुछ खाया और फिर शांतिकुंज की तरफ वापस लौट आये। हरिद्वार से ऋषिकेश की दूरी 20 किमी के आसपास है। ऋषिकेश में घूमने के लिए यात्री राम झूला, त्रिवेणी घाट और गंगा आरती के लिए आते हैं। ऋषिकेश भारत के सबसे पवित्र स्थलों में से एक है। हिमालय की निचली पहाड़ियों और प्राकृतिक सुन्दरता से घिरा यह स्थल गंगा नदी को अतुल्य बनाती है।

ऋषिकेश को केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री का प्रवेश द्वार माना जाता है। ऋषिकेश के राम झुला में हम सबसे पहले पंहुचे। हरिद्वार से रामझूला के लिए हमने दो ऑटो और एक बस बदली। गंगा नदी के ऊपर एक लोहे के पुल का निर्माण किया गया है, जो स्वर्गाश्रम को शिवानन्द आश्रम से जोड़ता है। रामझूला भ्रमण के बाद हम वापस शांतिकुंज के लिए वापस लौट आयें। अगली सुबह हमें देहरादून का सफर तय करना था जो हमारी अंतिम मंजिल भी थी। पहाड़ों की दुनिया देहरादून के लिए हमने बहुत कुछ सुना था। तो हम इसी चाह में कि हम वहां कल होंगे यही सोच कर हम अगली सुबह उठकर हम जल्दी ही तैयार हो गये और मंजिल के लिए निकल पड़े। देहरादून में हमने बौद्ध मंदिर, सहस्त्र धारा और गुच्चू पानी जाने की योजना बनाई थी, तो ऑटो में बैठकर रास्तों को देखते हुए पहाड़ों की छवि को मन में उतारने लगे। देहरादून अपने पर्यटन संस्कृति और प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए विश्व विख्यात है। देहरादून पहाड़ों से घिरा अद्भुत प्राकृतिक सुन्दर स्थान है। यहाँ कई खूबसूरत पर्यटन स्थल है। ऐसी ही एक लोकप्रिय जगह "बुद्धा टेम्पल" है जो एक तिब्बती महाविद्यालय के रूप में बनाया गया है। यह एशिया की सबसे बड़ी बुद्धिस्ट समाधि है। मंदिर में स्थित बुद्ध की विशालकाय

उत्तराखंड का हिन्दू ग्रंथों, वेदों और साहित्यों में महत्वपूर्ण स्थान है। हर की पौड़ी हरिद्वार का पवित्र धार्मिक स्थान है। इसका अर्थ है,नारायण के चरण।

प्रतिमा है। पूरे मंदिर में शांतिपूर्ण वातावरण है। यहाँ तिब्बती भोजन, पहनावा देखने के लिए आसानी से मिल जाते हैं। एक और खूबसूरत स्थान सहस्त्र धारा देहरादून में ही है। यह एक पिकनिक स्पॉट है। सहस्त्र धारा के आस पास की गुफायें इस जगह की सुंदरता को जोड़ती हैं। सहस्त्र धारा की सुंदरता मानसून के वक्त और अधिक बढ़ जाती है। ऐसा कहते है कि बहते हुए पानी की धारा में सल्फर की उपस्थिति के कारण इस झरने के पानी में औषधीय गुण है, जो त्वचा रोग को नष्ट कर देते हैं। एक और खूबसूरत स्थान रोब्बर केव्स (गुच्चू पानी) भी है। गुच्चू पानी पहाड़ों से घिरा हुआ एक संकरा स्थान है। जहाँ से पर्यटक गुजर कर इस गुफा का नजारा देखते हैं, ये किसी भूतिया फिल्म के नजारे से कम नहीं है। गुफा से गुजरते हुए आगे जाकर एक सरोवर है, जहाँ पर्यटक आकर मनोरंजन करते हैं। गुफा में सभी मौसम में पानी भरा रहता है। यह गुफा 5 बजे बंद हो जाता है। ये गुफा 600 मी. लम्बी है और दो भागों में बटी हुई है। इसके मध्य में पानी बहता रहता है। प्राकृतिक सौन्दर्य का अद्भुत नजारा है। इस गुफा के देखरेख का कार्यभार उत्तराखंड सरकार संभालती है। देहरादून में बौद्ध मंदिर, सहस्त्र धारा, गुच्चू पानी घूमने के बाद दिनभर की थकान से हम चूर हो चुके थे, इसलिए शांतिकुंज अपने गंतव्य के लिए हम निकल गए अगली सुबह हमारी ट्रेन थी। इस पांच दिवसीय यात्रा ने हमें प्रकृति की मनोरम छटा दिखाई, हम प्रकृति के बेहद करीब थे, और देहरादून की प्राकृतिक सुन्दरता, हरिद्वार की शांति और गंगा को हृदय में बसाये हम अपने घर के लिए निकल पड़े।

एम.ए. जनसंचार विभाग

शैक्षणिक भ्रमण के दौरान मेरी पहली नेपाल यात्रा

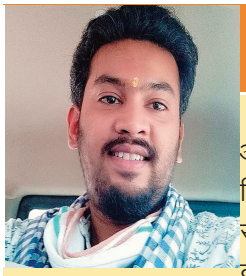

गौरव कुमार

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के सौजन्य से समाज कार्य विभाग के द्वारा समाज कार्य में स्नातक करते वक्त षष्टम छमाही में शैक्षणिक भ्रमण के रूप में चंपारण जाने का अवसर मिला था। हमारा शैक्षणिक भ्रमण 14/02/2018 से पश्चिमी चंपारण में कार्यरत बुनियादी विद्यालयों का क्षेत्रीय अध्ययन करना था। इसी दौरान 17/02/2018 को जिंदगी में पहली बार विदेश यात्रा करने का अवसर प्राप्त हुआ। हम सभी संख्या की दृष्टि से 10 थे, जो कि दो दल में नेपाल यात्रा के लिए निकले थे। पहले दस्ते में मैं यानि गौरव कुमार, आशु बोध, सोनम, नितेश, सागर, प्रियंका थे। हम सभी बिहार के सबसे मशहूर गाड़ी बोलेरो में थे और दूसरे दस्ते 3 बाइक्स पर बाइकर्स की तरह स्वदेश से विदेश की यात्रा के लिए निकले। दूसरे दस्ते में निदेशक महोदय प्रो. मनोज कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. मुकेश कुमार, रियाज, स्नेहा कुमारी, सुधीर कुमार और साथ में ही चंपारण के हमारे मार्गदर्शक और कस्तूरबा महिला इंटरस्तरीय स्कूल के प्रधानाचार्य दीपेन्द्र वाजपेयी जी भी थे। हम लोगों ने यात्रा की शुरुआत पश्चिमी चंपारण के भितिहरवा गांव के गांधी आश्रम के पास स्थापित विद्यालय से शुरू की थी। भारत से नेपाल तक की हमारी यह पहली विदेश यात्रा के लिए हमें मात्र 25 किलोमीटर का ही सफर तय करना पड़ा। अगर रास्ते की बात करें तो यह 25 किलोमीटर की यात्रा हमारे लिए बहुत ही मनोरंजक और चुनौतीपूर्ण दोनों रहा। मनोरंजक इसलिए क्योंकि हम सबके दिलो–दिमाग में यह बात चल रही थी कि हम अपनी जिंदगी में पहली बार विदेश यात्रा कर रहे हैं। इस लहजे से हमें यह यात्रा बहुत ही ज्यादा मनोरंजक लग रह रही थी। यह चुनौतीपूर्ण इसलिए था क्योंकि जिस रास्ते से हम सभी जा रहे थे वह काफी ज्यादा टूटी–फूटी हुई थी। सड़क के क्षतिग्रस्त होने का कारण 2017 में आयी बाढ़ थी। पश्चिमी चंपारण में आए बाढ़ के कारण सड़कें बहुत ही ज्यादा जर्जर अवस्था में आ गई थी और रास्तों पर बालू जम गई थी। जिसके कारण जो दूसरे दस्ते के लोग थे यानी जो बाइक्स से जा रहे थे उनकी गाड़ियां फिसल रही थी और मैं जिस ग्रुप में था, उसमें भी काफी परेशानी हो रही थी। धूल काफी ज्यादा उड़ रही थी जिससे हमें अपने बोलेरो के शीशों को बंद करना पड़ा। हालाँकि कुछ दूर तक यह रास्ता रहा उसके बाद हम लोगों ने जंगल में प्रवेश किया, जो वाल्मीकि टाइगर रिजर्व के नाम से जाना जाता है। यह बिहार का संभवतः इकलौता टाइगर रिजर्व है। यह जंगल लगभग 8 किलोमीटर के आसपास थी।

हमारे साथ जो स्थानीय ड्राईवर थे, वह बता रहे थे कि बाघ, हिरण, नीलगाय आदि कई अन्य जानवर भी यहां पाए जाते हैं। हम लोगों ने भी खुद अपनी आंखों से नेपाल से लौटते वक्त जंगल में हिरण को देखा था। हम लोगों ने किसी भी प्रकार से हिरण या किसी अन्य जानवर को क्षति नहीं पंहुचाई। जंगल के खत्म होने के बाद भारत की सीमा पर सशस्त्र सीमा बल तैनात थे। हम लोगों की गाड़ी जब बॉर्डर पर पहुंची तो वहां पर हमसे पूछताछ की गई। नाम, पता हम कहां से आए हैं, क्यों आए हैं और क्या उद्देश्य है, सारी जानकारी लेने के बाद हम लोगों को बॉर्डर के उस पार नेपाल जाने की अनुमति दे दी गयी। हम लोगों के मन में खुशी की लहर दौड़ रही थी कि हम लोग अपने देश से दूसरे देश जा रहे हैं। नेपाल में सबसे पहले हमें बहुत ही सुंदर निर्मल स्वच्छ अविरल पानी की धारा देखने को मिली और इस नदी का नाम पंडई नदी था। साथ ही साथ चारों ओर छोटी सी नदी पहाड़ों से घिरी हुई थी। छोटी सी नदी की धारा और उसके बीच उसी नदी को पार करते हुए हमारी गाड़ी आगे बढ़ रही थी क्योंकि बाढ़ के कारण जो पुल बना हुआ था, वह क्षतिग्रस्त अवस्था में हमें दिख रहा था। उस नदी को पार करते हुए हमारी गाड़ी आगे बढ़ी और एक बड़ी पहाड़ी हमें देखने को मिली जो एक ओर से पूरा हरा–भरा था वहीं दूसरी ओर से सिर्फ हमें मिट्टी की परत देखने को मिल रही थी। यहाँ से हमें नेपाल की यात्रा का अद्भुत नजारा देखने को मिलना शुरू हो गया और हम लोगों ने वहां से यात्रा का लुत्फ उठाना शुरू कर दिया। नेपाल के अंदर हमारी गाड़ी ज्यादा दूर तक नहीं जा सकती थी। भारत के बॉर्डर से निकलने के बाद नेपाल का बॉर्डर जहां से शुरू होता है वहां से हमारी गाड़ी आगे नहीं जा सकती थी। क्योंकि उसके लिए परमिट लेनी होती है और कुछ अन्य कानूनी कागजात या फिर कार्यवाही करनी पड़ती है। हालांकि जो बाइक से लोग थे, वे बाइक से ही अंदर गए थे। क्योंकि बाइक को अमूमन आने–जाने की इजाजत है। हम लोग वहां से पैदल आगे की ओर बढ़ गए। हम लोग नेपाल में जिस जगह पर गए थे उस गाँव को ठोरी के नाम से जाना जाता है। वहां के स्थानीय लोग, और वहां की जो कला–संस्कृति, वेशभूषा, रहन–सहन और वहां के घर की बनावट, खेत–खलियान इन सभी नजारों का हमने भरपूर लुत्फ उठाया। इसका कारण स्थानीय ड्राइवर ने यह बताया कि बिहार में शराबबंदी के कारण इस जगह पर शराब की खपत बढ़ गई है। वहां पर जो दुकानें और घर की बनावट है वह सीमेंट की नहीं थी। हम लोग यह भी कह सकते हैं कि एक गांव से दूसरे गांव की ओर गए थे, लेकिन जिस गांव से हम लोग दूसरे गांव की ओर गए उसमें काफी ज्यादा अंतर हम लोगों को देखने को मिला। रहन–सहन, खान–पान, संस्कृति और शारीरिक बनावट में भी काफी अंतर देखने को मिला। नेपाल की खूबसूरती वहां के वातावरण के कारण काफी मनमोहक है। नेपाल के पहनावे की अगर बात करें तो वह काफी हद तक पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित दिखी। नेपाल की सीमा पर जो गांव बसा है,

नेपाल के पहनावे की अगर बात करें तो वह काफी हद तक पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित दिखी।

वहां पर जो सभ्यता हमें देखने को मिली वह हम लोगों के लिए आश्चर्यचकित करने वाली थी। हमारी जो सूझ–बूझ है या फिर कल्पना है या फिर हमारी जो अपनी संस्कृति है, हम उस चश्मे से जब वह देख रहे थे, तो हमें वह काफी अजीब और काफी प्रभावित करने वाला किस्सा लगा। इस यात्रा के दौरान हमारा सौभाग्य था कि हमारे विभाग के विभागाध्यक्ष एवं विद्यापीठ के निदेशक प्रोफेसर मनोज कुमार और इस शैक्षणिक भ्रमण के मार्गदर्शक एवं पर्यवेक्षक असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. मुकेश कुमार सर हमारे साथ थे। हालांकि यह बातें मैंने आपको शुरुआत में भी बताई थी। यहां पर इस बात का जिक्र इसलिए कर रहा हूं, क्योंकि इन दोनों के कारण ही हमारी पहली विदेश यात्रा संभव हो पाई थी। यात्रा के दौरान वे दोनों दूसरे ग्रुप में थे और हम सभी छात्र एवं छात्राएं दूसरे ग्रुप में थे। हमारे साथ एक यह बात थी कि हमारे लिए यह जगह बिल्कुल ही नया था। लेकिन हम सभी इतने ज्यादा उत्साहित थे कि हम लोगों ने पैदल ही नेपाल की सीमा पर बसे ठोरी गांव घूमना प्रारंभ कर दिया। कुछ समय में हम लोगों ने थोड़ा–बहुत वहां के ग्राम का भ्रमण किया और वहां के लोगों को अपनी आंखों से देखा। हम–सबके मन में एक प्यारी सी अनुभूति यह थी कि हम महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी समाज कार्य अध्ययन केंद्र के बैचलर ऑफ सोशल वर्क का प्रथम बैच है जिसने शैक्षणिक भ्रमण के दौरान अंतरराष्ट्रीय यात्रा की। इस बैच का हिस्सा मुझे भी बनने का अवसर प्राप्त हुआ है तो यह मेरे लिए बहुत ही गौरव की बात है। यात्रा की शुरुआत तो पहले ही हो चुकी थी, लेकिन सेल्फी का दौर नेपाल की सीमा के पास स्थित ठोरी गांव में शुरू हुआ। नेपाल की सीमा जैसे ही प्रारंभ हुई वहां से सड़क के दोनों ओर कतार में कई सारी दुकानें थी और उन्हीं दुकानों में दैनिक प्रयोग की विभिन्न वस्तुएं मिल रही थी। साथ ही उन साधारण सी दुकानों में शराब की बोतलें भी हमें देखने को मिली थीं। दुकानों की कतार खत्म होने के बाद छोटी सी टर्निंग पर प्रकृति का अद्भुत नजारा सभी को ललायित कर रहा था। बोलेरो में बैठा दल और बाइकर्स का दल दोनों पुनः एक साथ हो गए थे। यही स्पॉट सेल्फी का भी प्रमुख केंद्र बना। सेल्फी के साथ–साथ यहां पर ग्रुप में कई सारी फोटो ली गई। कई बार तो हमारे शिक्षक ने भी हमारी फोटो खिचीं। इस तरह हमारे शिक्षकों एवं सहपाठियों ने मिलकर पूरे वातावरण को कैमरे में कैद कर लिया। कई बार हमें फोटो लेने के लिए राहगीरों की भी मदद लेनी पड़ी। एक स्थानीय महिला जो अपनी सहेली के साथ वहां से गुजर रही थी उससे हमारी सहपाठी स्नेहा और आशु ने अनुरोध किया कि कृपया करके हमारी एक छवि कैमरे में कैद कर लीजिए जिससे की यादगार पल हमेशा हम सब के पास रह सके। इस छोटी सी गुजारिश को हमारे पहले विदेश यात्रा में हमारे पड़ोसी देश के नागरिकों ने मुस्कुराते हुए स्वीकार कर लिया। इन पलों ने हमारे इस शैक्षणिक भ्रमण को सिर्फ यादगार ही नहीं बनाया बल्कि कई मौकों पर इंसानियत का पाठ भी पढाया। इस यात्रा के दौरान हमें हर स्थान के साथ इतना लगाव हो जाता कि जैसे–जैसे हम यात्रा में आगे बढ़ते जाते लगता कि जैसे कुछ छुट रहा हो।

हमारे छोटे–छोटे अनुरोधों को जिस तरह वहां के स्थानीय निवासी मान रहे थे वह हमारे लिए एक विशेष अनुभव था। हम सभी ने उनके प्रति आभार प्रकट किया और फिर वहां से वापस जाने की तैयारी करने लगे। लेकिन इसी दौरान नेपाल की एक बहुत ही प्यारी और स्वादिष्ट व्यंजन जिसे चाउ–चाउ भी कहते हैं, उसे हम सब ने खाया। खाने की वजह यह थी कि मेरे जेहन में यह था कि हम इतने दूर अंतरराष्ट्रीय यात्रा पर आए हैं और बिना यहां से कुछ खाए या फिर बिना यहां से कुछ ऐसी याद लिए चले जाएं, यह अच्छी बात नहीं होगी। इसलिए मैंने वहां की स्थानीय दुकान जिसमें कुछ खाने–पीने के सामान मिल रहे थे उसमें प्रवेश किया और उस दुकान में चाउमिन की तरह दिखने वाले चाउ–चाउ को खरीदा। मेरे दिमाग में उस वस्तु को खरीदने से पहले यह चल रहा था कि हमारे पास जो मुद्रा है वह यहां पर चलेगा या नहीं। मन में असमंजस थी फिर भी हमने सामान लिया और उनसे यह पूछ डाला कि मेरे पास तो भारतीय मुद्रा है क्या यहां पर चलेगा। उस स्थानीय दुकानदार से बड़ी अच्छी बात सुनने को मिली कि यहां पर भारत और नेपाल दोनों की मुद्राएं चलती है क्योंकि यह गाँव सीमा पर स्थित है इसलिए यहां पर आसानी से दोनों मुद्राएं चलती हैं। हमें बड़ी खुशी हुई और हमने उस चाउ–चाउ को खरीदा। मैं छोटी सी बात और जोड़ना चाहूंगा, इंस्टेंट नूडल्स को मैंने पहले भी हिंदी विश्वविद्यालय में ही खाया था जिसके कारण नेपाल की सीमा को पार करने के बाद मेरे मन में यह बात आई थी कि मैं कोशिश करूंगा कि स्थानीय दुकान से मुझे अगर सौभाग्य मिलेगा तो मैं उसे जरुर खरीद कर खाऊं और अपने देश भारत लेकर भी आऊं। हमारी यात्रा यहां से थोड़ी आगे बढ़ती है। हमारे सहपाठी मग्न होकर फोटो–सेल्फी लेने में व्यस्त हो जाते हैं। स्थानीय नेताओं के साथ हम लोग चर्चा भी करते हैं। स्थानीय ने. ताओं के साथ हमारे निदेशक महोदय कई समसामयिक मुद्दों पर चर्चा करते हैं इसके अलावा स्थानीय संस्कृति एवं समस्या पर भी चर्चा होती है। भारत और नेपाल दोनों के बीच उस वक्त जो विचार मन में आ रहे थे, वह अविस्मरणीय हैं। वहां के स्थानीय नेता के

नेपाल शैक्षणिक भ्रमण के दौरान की तस्वीर

अनुसार पता चला कि उनका जो ग्राम पंचायत है वह 22 किलोमीटर का है और जिस प्रकार भारत में सिपाही को देखकर ही आम नागरिक डर जाते हैं उसके बिल्कुल विपरीत नेपाल में आम नागरिक किसी भी प्रशासनिक अधिकारी से भी कभी नहीं डरते और निडर होकर उनका सामना करते हैं। अपने हक के लिए लड़ते हैं और प्रशासनिक अधिकारी के द्वारा अगर दबाव डाला जाता है तो उन्हें खदेड़ कर भगा देते हैं। उनके इन वाक्यों का सार सीधा सा यह है कि वह यह बताना चाह रहे थे कि हम बिल्कुल निडर और साहसी हैं और अपने हक के लिए आवाज उठाने में कभी संकोच नहीं करते। डटकर अपने हक के लिए लड़ते हैं। नेपाल में जो अंतिम क्षण हम लोगों ने बिताए उन क्षणों में वहां के स्थानीय नेता से बातचीत हुई और बातचीत के बाद हमारी यात्रा यानी कि नेपाल की यात्रा समाप्त हो गई। जॉर्ज पंचम की कोठी और भिखना ठोरी रेलवे स्टेशन यह सब भी हम सभी ने भारत लौटने के क्रम में देखा। इन दोनों जगहों को देखने के बाद हमारी गाड़ी फिर से आगे की ओर निकल चली और जंगल में प्रवेश कर गई। कुछ दूर जंगल में चलने के बाद हम जिस रास्ते से जा रहे थे, उसके बीच से एक हिरण को जाते हुए देखा। हालांकि जंगल की सड़क कुछ दूर तक जर्जर अवस्था में थी, जिसके कारण गाड़ियां हिलती–डुलती धीरे–धीरे चलती गईं। यह यात्रा काफी रोचक रही। हम सभी ने साहस के साथ बिना डरे सामना किया। हम लोगों के जेहन में डर की जगह उत्साह था कि हम एक ऐसी यात्रा पर हैं जो बहुत अविस्मरणीय और अद्भुत है। इस तरह से हम लोगों ने भितिहरवा गांव में प्रवेश कर लिया और गांधी आश्रम होते हुए पुनः कस्तूरबा महिला इंटर स्कूल में हमारी गाड़ी रुक गई और यहां पर हम सबकी यह यात्रा पूरी हो गई। मेरी स्वयं की पहली अंतरराष्ट्रीय और पहली नेपाल यात्रा का समापन कुछ इस तरह से हुआ। हालांकि इस यात्रा को मैं नहीं मानता कि समाप्त हो गई क्योंकि जो यादें, जो अनुभव और जो समय व्यतीत किया वह सदा हमारे जेहन में अंकित रहेगा। हमारी यात्रा उस पल के लिए समाप्त हो गई लेकिन इस लेखन के बाद यात्रा फिर से जगजाहिर होगी। मैं शैक्षणिक भ्रमण और साथ में भ्रमण के दौरान अन्य यात्राओं के लिए महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र के अंतर्गत महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी समाज कार्य अध्ययन केंद्र का आभार व्यक्त करता हूँ। विभाग के समस्त आदरणीय प्रोफेसर और माननीय निदेशक महोदय प्रो. मनोज कुमार सर का तहे दिल से आभार व्यक्त करता हूं। साथ ही पश्चिमी चंपारण के कस्तूरबा बालिका उच्च विद्यालय के प्रधानाचार्य दीपेन्द्र वाजपेई सर का अपने और विश्वविद्यालय की ओर से आभार व्यक्त करता हूँ। ■

एम.ए. महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी समाजकार्य अध्ययन केंद्र

पर्यावरण और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया

बी. एस. मिरगे

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के लिए पर्यावरण गंभीर सरोकार या चिंता का विषय होना चाहिए। प्राकृतिक आपदा जैसे बाढ़, भूकंप, सुनामी, आगजनी, समुद्री हलचल की स्थिति आने पर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा लोगों को जागरूक करना चाहिए। पर्यावरण शिक्षा, संरक्षण और जागरूकता के लिए टी.वी., इंटरनेट, रेडियो, यू टयूब, ब्लॉग आदि माध्यमों का उपयोग प्रभावकारी साबित हो सकता है। वायु, ध्वनि, जल प्रदूषण और भू–क्षरण से पर्यावरण प्रभावित होता है और इससे पर्यावरण में पाये जाने वाले जीव–जंतु, वनस्पति, प्रकाश, मिट्टी, नदी, पहाड़ आदि को नुकसान पहुंचता है। पर्यावरण की रिपोर्टिंग करते समय पर्यावरण से जुड़े नियम, अधिनियम और कानूनों के बारे में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को काम कर लक्षित समुदाय को भी जागरूक, शिक्षित करना चाहिए। पर्यावरण संरक्षण को लेकर विकास साक्षरता, सामाजिक जागरूकता और राजनीतिक समझदारी को प्रोत्साहित करने के लिए इस मीडिया को आगे आना चाहिए। हमारे देश में विकास संचार की पर्याप्त संभावना है जिस पर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का ध्यान जाना चाहिए। जबकि अभी भी मनोरंजन एवं राजनीति से जुड़े कार्यक्रम ही अधिक समय ले रहे हैं। वैसे भारत में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के आगमन को बहुत अधिक समय नहीं हुआ है अपितु पांच दशकों से अधिक समय के काल में यह मीडिया तेजी से बढ़ गया है। एक अनुमान के अनुसार भारत का मीडिया और मनोरंजन उद्योग 2022 तक बढ़कर 52.6 अरब डॉलर यानी 3.73 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच जाएगा। इसलिए इसका हमारे समाज पर अधिक प्रभाव दिख रहा है। इस दौरान इसके कंटेंट में परिवर्तन आया है। इसका उपभोग करने वालों की संख्या बढ़ रही है और इसके विकास की दिशा में भी बदलाव दिख रहे हैं। एक तरफ टीवी और सिनेमा जैसे पारंपरिक प्लेटफार्म है तो दूसरी तरफ ओवर द टॉप सेवाएं जैसे नए पीढ़ी के प्लेटफार्म जिसमें स्काइप, व्हाट्सअप, नेटफ्लिक्स आदि मौजूद है। इसका होश उड़ा देने वाला बड़ा बाजार देश–दुनिया की अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर सकता है। **एसोचेम के अनुसार सन 2021 तक हम मीडिया और मनोरंजन पर प्रतिव्यक्ति 32 डॉलर खर्च कर रहे होंगे** वही चीन 222 डॉलर तथा अमेरिका 2260 डॉलर

> मीडिया में लोगों की सहभागिता बढ़ाने से वह लोककल्याणकारी बनता जाएगा। पत्रकारिता का स्थानीयकरण या लोकलीकरण करने से वह और सशक्त और व्यापक होता जाएगा।

खर्च कर रहे होंगे। बड़ी तेजी से बदलते इस क्षेत्र में रोजगार की भी बड़ी संभावनाएं बन सकती है। आज मनुष्य या समाज से जुड़े विभिन्न विषयों के चौनल विद्यमान हैं और आ भी रहे हैं परंतु पर्यावरण को समर्पित चौनल्स की संख्या अपेक्षा के अनुरूप नहीं बढ़ी है। यह एक वास्तंविकता है कि व्यावसायिकता के चलते विषयों का चयन भी इस मीडिया के समक्ष बड़ी चुनौती के रूप में सामने है। दूसरी ओर सामाजिक सरोकार की दिशा में इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के सहारे सरकार दूर–दराज के क्षेत्र में अपनी पहुंच बनाने में कामयाब रही है और इसका असर भी ग्रामीण समुदायों पर दिखता है। इस वर्ष के बजट में डिजिटल गांव की सं. कल्पना इस दिशा में उठाया गया महत्वाकांक्षी कदम साबित हो सकता है। श्वेत क्रांति, हरित क्रांति इसके सफलतम उदाहरण के रूप में दिखते हैं। हाल के वर्षों में केबल और सेटेलाइट नेटवर्क के चलते भारत में इलेक्ट्रोनिक मीडिया में क्रांति आयी है। हर घर में केबल नेटवर्क एक आवश्यकता बना हुआ है। पर्यावरण संरक्षण के लिए समर्पित व्यक्ति, संस्था, समुदाय और सरकार के कार्यों को इलेक्ट्रोनिक मीडिया के माध्यम से उत्साहित और प्रोत्साहित करना चाहिए। नदी स्वच्छता अभियान, स्वच्छता अभियान, शौचालय निर्माण, प्लास्टिक मुक्ति, ग्लोवल वार्मिंग के खतरे जैसे विषय इस मीडिया के कंटेंट के केंद्र में होने चाहिए। 'जलवायु परिवर्तन' यह नई शब्दावली हाल के दिनों में सभी जगह उपयोग में लायी जा रही है। इसके प्रभाव को लेकर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को लोगों में शिक्षा का अभियान छेड़ना चाहिए। पर्यावरण शिक्षा जैसे समाज की कमजोर कड़ी है वैसे ही पत्रकारिता की भी है। पर्यावरण विशेषज्ञ पत्रकारों का अभाव, पर्यावरण शिक्षा से दूर किया जा सकता है। भारत में हर क्षेत्र का पर्यावरण और जलवायु भिन्न–भिन्न हैं और लोग अपने आस–पास के पर्यावरण से जुड़ी बातें जानना और समझना अधिक पसंद करते हैं। खुद की रूचि और उत्तरदायित्व के चलते पत्रकार इस तरह की खबरों को अहमियत देते हैं। पर्यावरण मानव जीवन का हिस्सा है। पर्यावरण में अवस्थित हर चीज हमारे जीवन से जुड़ी हुई है। मानव जीवन की विकास अवस्थाओं में हम पर्यावरण पर पूर्णतया निर्भर है। कुछ दिन पहले ही स्विटजरलैंड के दाओस में विश्व एकोनॉमिक फोरम की बैठक हुई। इस बैठक में विश्व जोखिम रिपोर्ट पेश किया गया. जिसमें पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं को बड़ी जोखिम माना गया। इसमें कहा गया है कि वैश्वीकरण के चलते मुख्य रूप से तीन सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरणीय समस्याएं पैदा हुई हैं। इस रिपोर्ट में पांच डिग्री सेल्सियस तक तापमान बढ़ने की संभावना व्यक्त की गयी है। इस खतरे से पता चलता है कि हमें पर्यावरण को कितनी गंभीर दृष्टि से देखना और सोचना चाहिए। पर्यावरण संरक्षण के लिए चार आर यानी रिड्यूस, रिसाइकल, रियूज और रिफ्यूज को महत्वपूर्ण माना गया है। इस सिद्धांत का पालन करने से पर्यावरण से संबंधित कई खतरों और जोखिमों को कम किया जा सकता है।

इसलिए मुद्दों को अंतरराष्ट्रीय नजरों से देखने की कोशिशें की जा रही है। पर्यावरण को भी हमें इसी नजरिए से देखना चाहिए। देश में मनोरंजन के कार्यक्रमों को देखने वालों की संख्या अधिक और पर्यावरण से जुड़े कार्यक्रमों को देखने वालों की संख्या तुलना में काफी कम है। इसके पीछे मीडिया का अर्थ कारण है। जब तक लोग पर्यावरण के कार्यक्रमों को देखने की जरुरत महसूस नहीं करेंगे तब तक इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का ध्यान इस ओर नहीं जाएगा। इसके लिए पहली शर्त है कि लोगों को पर्यावरण को अपने जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा मानना होगा। जैसे ही लोगों का झुकाव इस ओर बढ़ेगा, मीडिया इसके प्रति संवेदनशील होता चला जाएगा। हाल के दिनों में मनोरंजन, राजनीति, पारिवारिक और क्रिकेट जैसे कार्यक्रमों को देखने वाले दर्शक पर्यावरण के कार्यक्रमों का समय चुरा रहे हैं और अपनी नीति के चलते जहां दर्शक नहीं वहां यह मीडिया अधिक गौर नहीं करती। दूसरा बाजार का भी बड़ा महत्व है.जो बिकता है वही परोसा जाता है या ऐसा परोसा जाता है जो बिकता है। पर्यावरण साक्षर दर्शक बनने के लिए लोगों

को खुद पर्यावरण की रिपोर्टिंग में शामिल किया जाना चाहिए। इस तरह की पहल को ग्राउंड रिपोर्ट कहा जाता है। अलग–अलग उपलब्ध माध्यमों पर लिखेंगे, दिखाएंगे और प्रकाशित–प्रसारित करेंगे तब इसका वैश्वीकरण होगा। जन चिंताओं के मुद्दों को तवज्जो मिलने पर मीडिया का ध्यान इस ओर जाएगा। मीडिया में लोगों की सहभागिता बढ़ाने से वह और लोककल्याणकारी बनता जाएगा। इसे मीडिया का लोकतांत्रिकरण कहा जाता है। पत्रकारिता का स्थानीयकरण या लोकलीकरण करने से वह और सशक्त और व्यापक होता जाएगा। ब्लॉग और सोशल मीडिया पर इसे बहुत अधिक स्कोप है। न्यूज मेकर कोई एंकर या पेशेवर पत्रकार ही नहीं, एक सामान्य दर्शक या नागरिक भी हो सकता है। जिस कार्यक्रम में दर्शकों या पाठकों को शामिल किया जाता है या उनकी चिंताओं को महत्व दिया जाता है उसे लोग अधिक चाहते हैं। ऐसी चाहत बढ़ाने के लिए पर्यावरण प्रेमियों को चाहिए कि वे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में खुद को शामिल करने के लिए मजबूर करें।

जनसंपर्क अधिकारी
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

भूला

सौरभ कुमार

भूल से हुई प्यारी भूल
अब भूल उस भूल को
यथार्थ का दामन थामे खड़ा है भविष्य का भूत
मिला क्या भूल जा...
क्या दिया बस याद रख
कर्ज के जजबात को पल–पल अपने पास रख।
भूल मत उस कर्ज को तू
हे ऋणी ओ! लघु मनु
उर बढ़ा औ–औ बढ़ा
ढ़क ले जरा तू आसमां
भूल जा अब भूल को तू
फिर कर न उस खता को याद रख, बस
भूल जा।
भूल में ही खोज अपनी
अस्मिता की नई दिशा
उस पल को याद कर
मंजिल की तू तलाश कर
क्यों है कुण्ठित मन हताश, पागल, क्षुब्ध सा,तू
भूल जा जरा– जरा।
भूल है क्या?
सुधार की नई दिशा
भूल को, भूल जा
याद रख तू आज को बसतू
भूल जा चिरवृथा।

शोधार्थी
शिक्षा विभाग

पीपल और प्रेम

विवेक कुमार साव

प्रेम प्रस्फुटित होता पीपल सा।
कही भी होता उदित
निकलता उससे प्राणवायु
जो मूल होता जीने का
ये प्रेम भी होता पीपल सा
जो निरंतर बढ़ता।
तंद्रा को छोड़
पाहन को तोड़
कोई सींचता नहीं
स्वतः ही उग जाता
कभी उखाड़ दिया जाता
घर के आंगन से
पर दीवार के किसी कोने में
निरंतर बढ़ता रहता पीपल सा।

एम.ए. हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग

सबकी माई सिंधु ताई

सुधीर कुमार

सिंधु ताई सपकाल एक ऐसी औरत की कहानी है जिसकी संघर्षगाथा हर व्यक्ति को रोमांचित किए बिना नहीं रह सकती है। उनके कार्यों के चलते ही आज उन्हें राष्ट्रीय और अंत. रराष्ट्रीय स्तर पर 'माई' के नाम से जाना जाता है। उनका जन्म महाराष्ट्र के वर्धा जिले के एक छोटे से गाँव पिपरी में हुआ था। बचपन में ही उनका विवाह बहुत ही कम उम्र में पड़ोस के गाँव के एक व्यक्ति से कर दिया गया था। वे पढ़ना चाहती थी लेकिन इनकी माँ समाज के भय से इन्हें पढ़ाना नहीं चाहती थी, परन्तु उनके पिता सिन्धु को पढ़ाना चाहते थे। इसलिए वे सिन्धु की माँ के खिलाफ जाकर उसे पाठशाला भेजते थे। माँ का विरोध और घर की आर्थिक परस्थितियों की वजह से सिन्धु की शिक्षा मे बाधाएँ आती रही। कमजोर आर्थिक परस्थिति, घर की जिम्मेदारी और बाल–विवाह की वजह से उन्हें पाठशाला छोड़नी पड़ी। विवाह के समय सिंधुताई मात्र 10 साल की थी जबकि उनके पति की उम्र 30 वर्ष के आसपास थी। ससुराल में उन्हें काफी प्रताड़ित किया जाता था। एक दिन दूसरे के बहकावे में आकर उनपर बदचलन का आरोप लगाकर उनके पति ने उन्हें घर से निकाल दिया। उस वक्त उनकी कोख में 9 महीने का बच्चा पल रहा था। अपने बच्चे को उन्होंने गाय के तबेले में जन्म दिया। इस संबंध में वे खुद बताती हैं कि बच्चे के नाल को अगर तेज धार वाले औजार से काटा जाए तो बड़ी आसानी से कट जाता है। किन्तु अगर उसको पत्थर से काटा जाए तो वह कटता नहीं। क्योंकि माई को अपने बच्चे का नाल खुद से काटना पड़ा था, उस वक्त उनकी सहायता के लिए कोई मौजूद नहीं था। वे बताती हैं कि नाल काटने के लिए उन्हें 16 बार पत्थर पटकना पड़ा, उसके बाद ही नाल कटा था। माई बताती हैं कि यह कहानी बहुत ही दर्दनाक थी। इतनी असहनीय पीड़ा के बावजूद लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। उसी रात तबेले में उन्होंने एक बेटी को जन्म दिया और उसके बाद जब वे अपनी माँ के घर गयी तब उनकी माँ ने उन्हें घर में रखने से इनकार कर दिया। वे कहती हैं कि अगर उनके पिता जीवित होते तो शायद वो अपनी बेटी को सहारा देते लेकिन ऐसा नहीं हो सका, क्योंकि पिता की पूर्व में ही मौत हो चुकी थी। ऐसी कष्टदायी स्थिति में दुधमुंहे बच्चे को लिए बीस साल की स्त्री करे तो आखिर क्या करे! उन्हें जब कोई सहारा न मिला तो उन्होंने अपने दुधमुंही बच्ची को लेकर स्टेशन पर भीख मांगना प्रारंभ किया। प्राप्त भीख से किसी तरह बच्ची और अपना गुजारा करने लगी। किन्तु दूसरे भिखारियों को भीख जल्दी मिल जाती थी और इन्हें भीख मांगना नहीं आता था, इसलिए उन्हें भीख कम ही मिल

पाती थी। माई को लगा कि आखिर इन भिखारियों में ऐसा क्या है जो इनको भीख जल्दी मिल जाती है और हमें नहीं! ऐसे ही उन्होंने भीख मांगना सीख लिया। अब उन्हें भीख मिलने लगी, वे खुद तो खाती ही थी और दूसरे भिखारियों को भी खिलाती थी। यह सब भिखारियों को अच्छा लगा और उन्हें भिखारियों का संरक्षण मिलने लगा। माई ने सबका ख्याल रखना शुरू कर दिया जिससे भिखारी भी इनको छोड़कर नहीं जाते थे। इसमें खास बात यह हुई कि जितने भी भिखारियों को उन्होंने खिलाया कोई भी माई को छोड़कर नहीं गया। सभी माई के परिवार का हिस्सा बनते चले गए। यहीं से माई के परिवार ने एक संस्था का रूप धारण कर लिया। माई बताती हैं कि रात को स्टेशन पर उनके साथ कोई घटना न घट जाए, इसलिए रात गुजारने के लिए श्मसान चली जाती थी। वे बताती हैं कि जवान स्त्री के लिए श्मसान सबसे सुरक्षित जगह होती है। रात में वहाँ कोई देख भी ले तो भूत समझकर खुद ही डर कर भाग जाते। इसलिए माई ने अपने लिए यह जगह चुनी। माई बताती हैं कि एक रात उन्हें शमशान में बहुत ही तेज भूख लग गई थी। शमशान में खाने को तो कुछ था नहीं। इसी बीच उनकी नजर एक जलती हुई चिता पर पड़ी। मृतक के घर वाले चिता जलाकर वापस लौट रहे थे और वहाँ पर कुछ आटा छोड़कर चले गए थे। माई को काफी भूख लगी थी उन्होंने झाड़ से कुछ पत्ते तोड़ लाए तथा उसी पर आटा गूँथ कर जलती चिता पर रोटी सेंक ली और उसे खाकर अपनी भूख मिटाई। माई बताती हैं कि उस रात वे आत्महत्या करने जा रही थी। रोटी खाने के बाद वे जोर–जोर से चिल्लाने लगी कि मुझे मरना है। इसी बीच उन्हें अनुभव हुआ कि पक्षियों और जानवरों की आवाजें उनके कानों में गूंज रही है और मानो वे कह रही थीं कि सिंधुताई तुम गलत कर रही हो! और माई ने आत्महत्या का विचार स्थगित करते हुए बेसहारा बच्चों के लिए जीने का संकल्प लिया। शुरुआती जिंदगी में कई बार अपने आपको मार डालने का प्रयास कर चुकी माई बताती हैं कि एक बार चिकलधरा (अम. रावती जिले में स्थिति) मरने के लिए गई और एक पेड़ के नीचे आत्महत्या के इरादे से खड़ी हो गई। इसी बीच उनके मन में ख्याल आया कि मरना तो है ही तो क्यों न थोड़ी देर और जी लिया जाए! तभी अचानक एक पेड़ पर उनकी नजर पड़ी। उन्होंने देखा कि कोई व्यक्ति पेड़ को कुल्हाड़ी मार गया था, पेड़ पर कुल्हाड़ी के निशान दिखाई दे रहे थे। यह देखकर उन्हें लगा कि कुल्हाड़ी के वार से घायल पेड़ जब सबों को छाया दे सकता है तो फिर मैं क्यों मरूँ! और उन्होंने मरना कैंसिल कर दिया।

इसके बाद वे सोचने लगी कि जिस प्रकार मैं अनाथ हूँ वैसे ही देश में और भी कितने ही बच्चे भी तो अनाथ हैं। क्यों न उनकी सेवा की जाय! इस प्रकार उस पेड़ ने सिंधुताई की जिंदगी में प्रेरणास्त्रोत का काम किया। आज भी उस घटना को याद करते हुए सिंधु ताई की आँखें चमक उठती हैं। उनके जीवन में उस पेड़ का बहुत बड़ा योगदान है जिसने उन्हें हजारों अनाथ व बेसहारा बच्चों की 'माई' बनने की प्रेरणा दी। सिंधु ताई ने अपनी बच्ची को पुणे की एक संस्था 'श्री दगडुशेठ हलवाई, पुणे, महाराष्ट्र' में गोद दे दिया ताकि वे बिना किसी भ. दभाव के सारे अनाथ बच्चों की माँ बन सकें। क्योंकि अगर उनकी बेटी साथ होती तो बाकी बच्चों में अपने–पराये की भावना पनप सकती थी, इसी से बचने के लिए माई ने खुद के बच्चे को दूसरी संस्था के हवाले कर दिया था। माई बताती हैं कि उन्हें सबसे पहला बच्चा पुणे में रेलवे पटरी पर पड़ा हुआ मिला था, जिसकी स्थिति काफी गंभीर थी। बच्चे के मुँह से खून निकल रहा था। उसको अपने पास लेकर माई ने पालन–पोषण करना शुरू किया। फिर धीरे–धीरे जो भी अनाथ बच्चे मिलते थे उनको वे अपने पास ले आती थी। अपने इन्हीं कार्यों के चलते कुछ ही समय में वे 'माई' के रूप में जानी जाने लगी। अब वह सभी अनाथ बच्चों की माई बन गई। माई बताती हैं कि उन्होंने महाराष्ट्र के औरंगाबाद, मराठवाड़ा आदि क्षेत्रों एवं नांदेड़ जिले के हिगोली स्टेशन पर कई वर्षों तक भीख मांगा। भीख मांगते हुए वे पड़ोसी राज्य कर्नाटक भी चली जाया करती थी। कर्नाटक सरकार ने हाल ही में एक पुरस्कार भी माई को दिया है, इस पर माई कहती हैं कि मैंने ये सोचा भी नहीं था कि जहाँ भीख मांगती थी वहाँ से एक दिन पुरस्कार भी मिल सकता है। सत्तर वर्षीय माई पिछले पाँच दशक से समाज कार्य व समाज सेवा कर रही हैं। इस दौरान उन्होंने 2000 बच्चों को गोद लिया, उनको पढ़ाया–लिखाया और उन्हें समाज में सम्मान के साथ जीने का अधिकार दिलाया। आज इनके बच्चे देश के बड़े–बड़े पदों पर सेवारत हैं। माई कहती हैं कि आज उनके 2000 बच्चे, 300 दामाद, 250 बहुएं हैं। माई को आज 1000 पोता–पोती और नाती–नातिन हैं। वे कहती हैं कि जो हमें मिला उसने कभी हमें धोखा नहीं दिया। माई को अब तक 750 से ज्यादा पुरस्कार मिल चुके हैं जिसमें राज्यस्तरीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार शामिल हैं। माई को 'अहमदिया नेशनल पीस फाउंडेशन पुरस्कार' लंदन में मिला जो अहमदिया मुस्लिमों की एक संस्था द्वारा दिया जाने वाला पुरस्कार है, इसे वे सबसे खास पल बताती हैं। उन्हें मिले हुए पुरस्कारों में से कुछ महत्वपूर्ण हैं–अहिल्याबाई होळकर पुरस्कार (महाराष्ट्र राज्य द्वारा), राष्ट्रीय पुरस्कार' आइकौनिक मदर', सह्यद्री हिरकणी पुरस्कार, राजाई पुरस्कार, शिवलीला महिला गौरव पुरस्कार, दत्तक माता पुरस्कार, रियल हिरोज पुरस्कार (रिलायन्स द्वारा), गौरव पुरस्कार आदि। इन सब पुरस्कारों से मिले सारे पैसे वे अनाथाश्रम के लिए इस्तेमाल करती हैं। उनके अनाथाश्रम पुणे के सासवड (महाराष्ट्र) और चिकलदरा में स्थित हैं। वर्ष 2010 में सिन्धुताई के जीवन पर आधारित 'मी सिन्धुताई सपकाळ' मराठी चित्रपट बनाया गया, जिसे 54वें लंदन फिल्म महोत्सव के लिए चुना गया था। वे अपनी माँ के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहती हैं कि अगर उनकी माँ ने उनको पति के घर से निकालने के बाद सहारा दे दिया होता तो आज वह इतने सारे बच्चों की माँ नहीं बन पाती।

वर्ष 2010 में सिन्धुताई के जीवन पर आधारित 'मी सिन्धुताई सपकाळ' मराठी चित्रपट बनाया गया, जिसे 54वें लंदन फिल्म महोत्सव के लिए चुना गया था।

एम.ए. महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी समाजकार्य अध्ययन केंद्र

सुझाव 3

कोरोना

डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी

प्रारब्ध पर अपने रोना हो गया।
संसार में सर्वत्र कोरोना हो गया।

मोह और स्वार्थ का हुआ त्याग,
पाना अल्प बहुत खोना हो गया।

कल की चिंता में निद्रा नदारद,
रात्रि में जागकर सोना हो गया।

घर में होकर भी घर के ना रहे,
परिवार में अलग होना हो गया।

विधाता के नियमों को न माना,
खुद के पापों का बोना हो गया।

मनुज हो चला है बहु अभिमानी,
स्व–कर्मों को अब ढोना हो गया।

भारतीय संस्कार लौटे 'अनवर',
स्वच्छता से हाथ धोना हो गया।

असिस्टेंट प्रोफेसर,
अनुवाद अध्ययन विभाग

दिहाड़ी मजदूर

श्यामदास गोंड

मैं अपनी विवशता रुपी चादर तले
सदियों से समाज में मशहूर हूँ
क्योंकि मैं दिहाड़ी मजदूर हूँ
कब सुनी मेरी आवाज समाज ने?
हमेशा ही तो ठुकराया है
मेरे सपने रोज टूटते रहें
कब उनकों ह्रदय से लगाया है?
मेरे तात ने सूखी रोटी खाकर
मुझे बड़े अरमानों से पाला है
दो जून की रोटी खातिर
मैं अपनों से इतना दूर हूँ

क्योंकि मैं दिहाड़ी मजदूर हूँ
आज यहाँ बसेरा कल वहाँ बसेरा
मेरे घर के छत नहीं बन पाते हैं
आषाढ़ सावन की आड़ लिए
जेठ की तपिस त्रिपाल की छेंद से
नित्य मेरे चूल्हे के तवे पर टपक जातें हैं।
अपने बच्चों को भूख से तड़पता देख
मेरे रोम–रोम सिहर जाते हैं।
ऐ जिंदगी अब होता नहीं सबर
मैं रोज ये सोच बिखर जाता हूँ
मैं आधुनिकता के चिलमन का
शोषित दस्तूर हूँ
क्योंकि मैं दिहाड़ी मजदूर हूँ

एम.एड. शिक्षा विभाग

कैमरा और कलम का मिश्रण

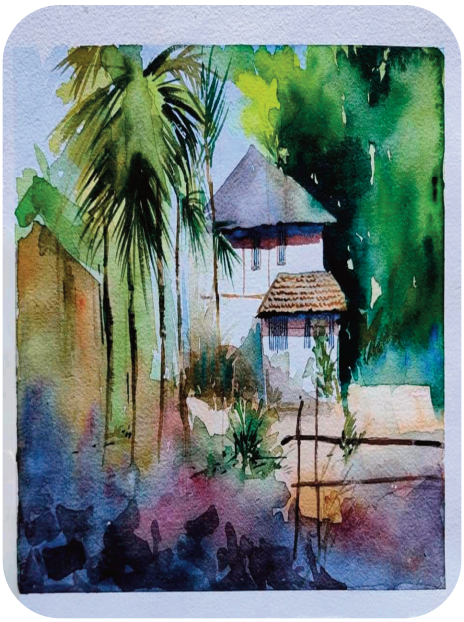

सुश्री चंद्रकला शाहु
शोधार्थी अनुवाद अध्ययन विभाग

मदार का फूल

प्रतीक त्रिपाठी
बीएड, शिक्षा विभाग

दुर्गाकुंड मन्दिर वाराणसी

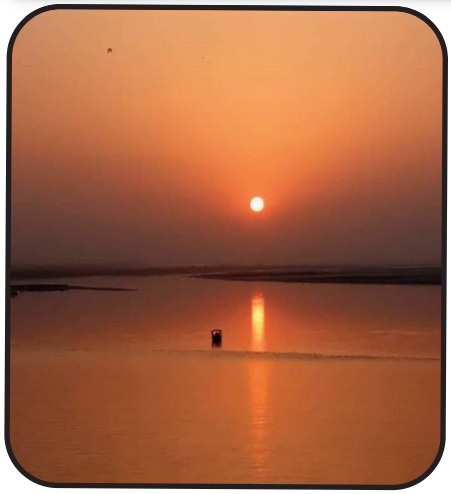

सरयू नदी और ढलता सूरज

छमाही पत्रिका
2020

गवाक्ष

अंक–प्रथम
जनवरी -जून

छायाचित्र - राजदीप राठौर

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi VishwaVidyalaya]Wardha
http://hindivishwa.org